International Journal of Advanced Research in Engineering Technology & Science
ISSN: 2349-2819
Impact Factor: 7.10
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal)
Email: editor@ijarets.org Volume-12 Issue-4 April-2025 www.ijarets.org

छत्तीसगढ़ राज्य के बालोद जिले में महिला उत्थान कार्यक्रम के क्रियान्वयन में प्रमुख चुनौतियां एवं समाधान एक प्रशासनिक अध्ययन

Akhilesh Sen

Research scholar Bharti Vishwavidyalaya, Durg, Chhattisgarh

Dr. Ashish Nath Singh

Assistant Professor, Bharti Vishwavidyalaya, Durg, Chhattisgarh

सार

छत्तीसगढ़ के बालोद जिले में महिला उत्थान कार्यक्रम के क्रियान्वयन में कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं, जिनमें महिलाओं के बीच सीमित जागरूकता, सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाएँ, अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा, आर्थिक बाधाएँ और प्रशासनिक अक्षमताएँ शामिल हैं। दूरदराज के इलाकों में कई महिलाओं को कार्यक्रम के अस्तित्व और लाभों के बारे में जानकारी नहीं है, मुख्य रूप से अपर्याप्त आउटरीच और संचार के कारण। इसके अलावा, जड़ जमाए हुए पितृसत्तात्मक मानदंड और लैंगिक रूढ़ियाँ अक्सर महिलाओं को सशक्तिकरण पहलों में पूरी तरह से भाग लेने से रोकती हैं। अपर्याप्त परिवहन और प्रशिक्षण सुविधाओं सहित क्षेत्र का खराब बुनियादी ढाँचा महिलाओं की कार्यक्रम सेवाओं तक पहुँच को और सीमित करता है। आर्थिक कठिनाई, वित्तीय स्वतंत्रता की कमी और सुलभ ऋण सुविधाओं की अनुपस्थिति महिलाओं की भेद्यता को बढ़ाती है और उनकी सक्रिय भागीदारी में बाधा डालती है। इसके अलावा, प्रशासनिक अड़चनें, सुविधाकर्ताओं के लिए अपर्याप्त प्रशिक्षण और स्थानीय सरकारी विभागों के बीच खराब समन्वय कार्यक्रम की प्रभावशीलता को कम करता है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, लक्षित जागरूकता अभियान, सामुदायिक संवेदनशीलता, बेहतर बुनियादी ढाँचा, वित्तीय संसाधनों तक पहुँच और सुव्यवस्थित प्रशासनिक प्रक्रियाएँ जैसे समाधान आवश्यक हैं। कार्यक्रम की सफलता के लिए नेतृत्व की भूमिकाओं में महिलाओं की भागीदारी को मजबूत करना और अधिक अंतर–विभागीय समन्वय सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है। इन समाधानों को लागू करके, महिला उत्थान कार्यक्रम बालोद में महिला सशक्तिकरण को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा सकता है, जिससे जिले में लैंगिक समानता और सामाजिक–आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा।

मुख्य शब्दरू . महिला उत्थानए बालोद जिलाए प्रशासनिक अध्ययनए छत्तीसगढ़ए महिला सशक्तिकरणए नीति क्रियान्वयन

प्रस्तावना

महिला उत्थान एक महिला द्वारा सामना की जाने वाली सभी समस्याओं के लिए एक छत्र अवधारणा है। यह एक गंभीर मुद्दा है जिस पर चर्चा और गुमराह किया गया है। यह पिछले कुछ शताब्दियों से ही चिंता का विषय बन गया है। इस संबंध में पिछले कुछ दशकों में कई आंदोलन हुए हैं, लेकिन हर बार यह महिला उत्थान की वास्तविक अवधारणा और मूल अर्थ से भटक गया। ऐसे कई अन्य शब्द हैं जो सशक्तिकरण शब्द से संबंधित हैंय जैसे, स्वायत्तता, महिलाओं की स्थिति, नारीवाद, लैंगिक समानता आदि और इसका अर्थ इसे संभालने वाले व्यक्ति के दृष्टिकोण के साथ बदलता रहता है। अवधारणा के अनुसार इसके अर्थ के संदर्भ में शब्दावलियों में बहुत कम अंतर है, लेकिन महिला उत्थान इन सभी के लिए एक शब्द प्रतिस्थापन है।

सशक्तिकरण की प्रक्रिया का अध्ययन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और कानूनी तरीके से किया जा सकता है। जब सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण की बात आती है, तो महिला उत्थान को घरेलू गतिशीलता, व्यक्तिगत विशेषताओं और लिंग–संबंधी बाधाओं के माध्यम से खोजा जा सकता है। महिला उत्थान के मामले में लैंगिक समानता और समानता सबसे पहले आती है (वेबस्टर डिक्शनरी, 2010), जिसे भारतीय संविधान द्वारा सुनिश्चित किया गया था। इस क्षेत्र में बहुत सारे अध्ययन किए गए हैं, लेकिन अभी भी कुछ जगह वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त करने में कमी है और यह पुनर्विचार स्वीकार किया जाता है कि जब महिलाएं प्रगति की मुख्य धारा में होती हैं, तभी आर्थिक और सामाजिक विकास सार्थक होता है। जवाहरलाल नेहरू ने महिला उत्थान को राष्ट्र के विकास से जोड़ा। उनके द्वारा दिए गए शब्दों से यह स्पष्ट है कि महिलाओं के विकास से परिवार में सुधार होता है और इस प्रकार एक राष्ट्र का विकास हो सकता है (जवाहरलाल नेहरू, 1951)। एक महिला परिवार और समाज में प्रमुख भूमिका निभाती है। परिवार और समाज में उनके योगदान ने समाज के विकास में महत्व बनाया। महिलाओं की भूमिकाएं और जिम्मेदारियां परिवार से परिवार, समाज से समाज, संस्कृति से संस्कृति में भिन्न होती हैं। पूरे जीवन चक्र में एक महिला की भूमिकाएं बेटी, बहू, पत्नी, मां, बहन, भाभी, दादी आदि बदलती रहती हैं। किसी भी परिवार में महिलाओं के जीवन को लेकर काफी उम्मीदें होती हैं। विशेषकर जन्म से ही क्या करें और क्या न करें की प्रक्रिया शुरू हो जाती है और परिवार में महिलाओं द्वारा किए गए कार्यों और त्याग को महत्व देने का कोई पैमाना नहीं है। यह अभी भी पीढ़ी दर पीढ़ी जारी है। जिम्मेदारियों के अलावा उसे अपने जीवन में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

कई बार वह स्वेच्छा से परिवार की सभी गतिविधियों में शामिल होती है, भले ही वह ऐसा करने में सक्षम न हो। जब परिवार निर्माण की प्रक्रिया की बात आती है तो उसके शब्द और भूमिका अपरिहार्य होती हैं। एक महिला के विवाह के बाद उसका मुख्य महत्व उसके पति, उनके बच्चों और उसके परिवार के सदस्यों के लिए हो जाता है, अपनी पसंद की प्राथमिकता अंतिम श्रेणी में आती है। महिला जीवन चक्र में अलग–अलग भूमिका निभाती है, यानी बेटी से बहू और मां से सास तक इस संक्रमण के दौरान उसे विभिन्न स्थितियों और अनुभवों का सामना करना पड़ता है। इस संबंध में मेसन (1986) आयु और महिला उत्थान से पता चलता है कि आयु बढ़ने के साथ–साथ महिलाओं में ज्ञान बढ़ता है और वे दिन–प्रतिदिन की गतिविधियों को प्रभावी ढंग से करने के लिए आत्मविश्वास विकसित करती हैं, जो उन्हें सशक्तीकरण की ओर ले जाता है। पिछली सहस्राब्दी में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका और गृह प्रबंधन, बच्चों की देखभाल, पोषण, स्वास्थ्य, बागवानी, पशु देखभाल और मुर्गीपालन संबंधी आवश्यकताओं में उनकी जिम्मेदारी को पहचाना गया है।

ग्रामीण महिलाओं को अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय धारा में लाने के लिए सरकार और गैर–सरकारी संगठनों द्वारा कई प्रयास किए गए हैं। लेकिन अभी भी विकास का लाभ इन महिलाओं और देश भर में उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति तक नहीं पहुंच पाया है। इसका मुख्य कारण गरीबी, अशिक्षा, संपत्ति की कमी और संसाधनों तक पहुंच की कमी है। हाल के दशक में हमारे समाज में महिलाओं की स्थिति और भूमिका में कुछ बुनियादी बदलाव हुए हैं। भारत सरकार ने 2001 को ष्महिला उत्थान वर्षष् के रूप में घोषित किया, ताकि श्जहां महिलाएं पुरुषों के समान सहयोगी होंश के सपने पर ध्यान केंद्रित किया जा सके। संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 1975 को अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष और 1975–1985 के दशक को महिला दशक घोषित किया, ताकि दुनिया भर में महिलाओं के सामने आने वाली समस्याओं का समाधान किया जा सके और उन्हें स्थायी लक्ष्य हासिल करने में मदद मिल सके। 1995 में चीन में महिलाओं पर विश्व सम्मेलन हुआ और उन्होंने महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए मजबूत नीतियों और एजेंडे के साथ समाज में उनकी स्थिति में सुधार किया, जो समाज के विकास की कुंजी है। सशक्तिकरण का अर्थ है व्यक्तियों और समुदायों दोनों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक ताकत को बढ़ावा देना। बदलते दशकों के साथ समाज में महिलाओं की स्थिति में काफी बदलाव आया है। सशक्तिकरण प्रक्रिया में कई परस्पर सुदृढ़ घटक शामिल हैं लेकिन सबसे पहले आर्थिक स्वतंत्रता से शुरुआत होती है

उद्देश्य

1. बालोद जिले में संचालित महिला उत्थान कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की प्रशासनिक प्रक्रिया एवं उससे जुड़ी प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण करना।

2. महिला उत्थान कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु संभावित समाधान एवं सुधारात्मक उपायों का प्रस्ताव करना।

अनुसंधान क्रियाविधि

यह अध्याय मुख्य रूप से अध्ययन के लिए उपयोग किए गए डेटा के स्रोत और नियोजित उपयुक्त तकनीकों पर ध्यान केंद्रित करता है। यह अध्ययन के उद्देश्यों का विश्लेषण करने के लिए उपयोग की जाने वाली विधियों की विस्तृत व्याख्या है।

डेटा विश्लेषण

महिलाओं का सशक्तिकरण एक सक्रिय बहुआयामी प्रक्रिया है जो महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी पूर्ण पहचान और शक्तियों का एहसास कराने में सक्षम बनाती है। जहाँ तक मौजूदा डेटा स्रोतों के साथ अध्ययन नहीं किया जा सकता है, प्राथमिक डेटा इस क्षेत्र में क्रॉस सेक्शनल अध्ययनों को देखना पसंद करते हैं। इसलिए एक अच्छी तरह से संरचित प्रश्नावली और अध्ययन के लिए उपयोग किए गए डेटा का उपयोग करके सर्वेक्षण करना बहुत महत्वपूर्ण है, जिसे बालोद जिले से यादृच्छिक रूप से चुना गया था। चूंकि हमारा प्रमुख उद्देश्य छत्तीसगढ़ में एक बेहतर सामाजिक रूप से उन्नत समाज में महिला उत्थान का अध्ययन करना है, इसलिए राज्य के राजधानी जिले बालोद को अध्ययन के लिए चुना गया है। निवास स्थान के संबंध में 15–34 आयु वर्ग की 1075 नमूना विवाहित महिलाओं को यादृच्छिक रूप से एकत्र किया गया था। पहले तैयार किए गए प्रश्नों की दक्षता का परीक्षण करने के लिए एक अच्छी तरह से संरचित प्रश्नावली का उपयोग करके 40 विवाहित महिलाओं के बीच एक पायलट सर्वेक्षण किया गया था। प्राप्त परिणामों से, प्रश्नावली में जहाँ भी आवश्यक हो, संशोधन किए गए और नमूना महिलाओं की जनसांख्यिकीय, सामाजिक आर्थिक और सशक्तिकरण विशेषताओं का विश्लेषण करने के लिए डेटा संग्रह के लिए एक अच्छी तरह से संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। 15–34 आयु वर्ग की महिलाओं का परिवार निर्माण प्रक्रिया में अधिक प्रभाव होता है। उस समय उनके लिए शिक्षा और करियर, विवाह, बच्चों की संख्या, घर निर्माण और बच्चों की शिक्षा के माध्यम से अपना भविष्य बनाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण समय होता है। इसलिए उन विशेष आयु समूहों में महिलाओं के सशक्तिकरण का अध्ययन करना बहुत महत्वपूर्ण है। क्या वे अपने जीवन के बारे में निर्णय लेने में सक्षम हैं।

छत्तीसगढ़ के बालोद जिले में महिला उत्थान कार्यक्रम के क्रियान्वयन में कई बड़ी चुनौतियाँ हैं। इनमें से एक मुख्य मुद्दा व्यापक सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाएँ हैं जो विकास कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी को सीमित करती हैं। पितृसत्तात्मक मानदंड अक्सर महिलाओं की शिक्षा, रोजगार और निर्णय लेने के अवसरों तक पहुँच को सोमित कर देते हैं, जिससे उनके लिए ऐसी पहलों से पूरी तरह से लाभ उठाना मुश्किल हो जाता है। इसके अलावा, अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा और संसाधन, जिसमें प्रशिक्षण केंद्रों, वित्तीय सेवाओं और परिवहन सुविधाओं की सीमित उपलब्धता शामिल है, कार्यक्रम की पहुँच और प्रभावशीलता में और बाधा डालते हैं। जागरूकता और संचार के मामले में भी एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि अपर्याप्त पहुँच और सूचना के प्रसार के कारण कई महिलाएँ कार्यक्रम या इसके लाभों से अनजान हैं। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण आवश्यक है।

सामुदायिक जुड़ाव और संवेदीकरण अभियान को बढ़ाने से लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में स्थानीय नेताओं और प्रभावशाली लोगों को शामिल करके सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाओं को तोड़ने में मदद मिल सकती है। बुनियादी ढाँचे में सुधार, जैसे कि अधिक सुलभ प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करना और बेहतर परिवहन सुविधाएँ प्रदान करना, महिलाओं की भागीदारी बढ़ा सकता है। स्थानीय गैर सरकारी संगठनों और समुदाय–आधारित संगठनों के साथ साझेदारी को मजबूत करने से अधिक महिलाओं तक पहुँचने और आवश्यक सहायता और संसाधन प्रदान करने में सहायता मिल सकती है। इसके अलावा, डिजिटल प्लेटफॉर्म और स्थानीय मीडिया के उपयोग सहित अभिनव संचार रणनीतियों को अपनाने से जागरूकता बढ़ सकती है और यह सुनिश्चित हो सकता है कि अधिक महिलाओं को कार्यक्रम और इसके लाभों के बारे में जानकारी दी जाए। ये समाधान बालोद जिले में महिला उत्थान कार्यक्रम के सफल कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

अध्ययन के लिए उपयोग की गई पद्धति नीचे दी गई है।

इस अध्ययन में उत्तरदाताओं की विभिन्न सामाजिक–आर्थिक, जनसांख्यिकीय और अन्य विशेषताओं का विश्लेषण करने के लिए एकतरफा और द्विचर वितरण तालिकाओं का उपयोग किया गया है। महिला सशक्तीकरण पर गहन अध्ययन के लिए ची–स्क्वायर परीक्षण, सूचकांक का निर्माण, कारक विश्लेषण, लॉजिस्टिक प्रतिगमन और विभेदक विश्लेषण जैसी विधियों का उपयोग किया गया।

विश्वसनीयता परीक्षण

क्रोनबैक का अल्फा आंतरिक विश्वसनीयता का सबसे आम उपाय है। इसका सबसे अधिक उपयोग तब किया जाता है जब आपके पास सर्वेक्षणध्प्रश्नावली में बहुविकल्पीय प्रश्न होते हैं जो एक पैमाना बनाते हैं और आप यह निर्धारित करना चाहते हैं कि पैमाना विश्वसनीय है या नहीं। क्रोनबैक अल्फा मापने वाले उपकरण की आंतरिक विश्वसनीयता को मापने के लिए ै के भीतर आयोजित एक विश्वसनीयता परीक्षण है। स्वीकार्य विश्वसनीयता मान 0.6 है। इसलिए, यदि प्रश्नावली का विश्वसनीयता परिणाम 0.6 से अधिक है तो प्रश्नावली को षविश्वसनीयष माना जाता है। नमूना महिलाओं के लिए सामाजिक आर्थिक स्थिति, मास मीडिया एक्सपोजर और सशक्तिकरण स्थिति के निर्माण के लिए उपयोग किए जाने वाले चर के महत्व का विश्लेषण करने के लिए ैै की मदद से विश्वसनीयता परीक्षण किया गया था। सामाजिक आर्थिक स्थिति के लिए क्रोनबैक का अल्फा 0.821 है, जो इस नमूना महिलाओं के साथ हमारे पैमाने के लिए उच्च स्तर की विश्वसनीयता को इंगित करता हैय इसी तरह मास मीडिया एक्सपोजर के लिए क्रोनबैक का अल्फा 0.784 भी उच्च स्तर की विश्वसनीयता दर्शाता है।

सूचकांकों	विश्वसनीयता सांख्यिकी क्रोनबैक का अल्फा
सामाजिक आर्थिक स्थिति	0ण्821
मास मीडिया एक्सपोजर	0ण्784

नमूना महिलाओं की जनसांख्यिकी, सामाजिक और आर्थिक विशेषताएँ

नमूना महिलाओं की जनसांख्यिकीय विशेषताएँ आयु समूहों, वैवाहिक स्थितियों और शैक्षिक पृष्ठभूमि की विविधता को दर्शाती हैं। आयु वितरण युवा, मध्यम आयु वर्ग और बुजुर्ग महिलाओं में महत्वपूर्ण प्रतिनिधित्व दर्शाता है, जो विभिन्न जीवन चरणों का एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है। नमूने में अधिकांश महिलाएँ विवाहित हैं, जो इस क्षेत्र के सामाजिक मानदंडों को दर्शाता है, जबकि एक छोटा अनुपात एकल, विधवा या तलाकशुदा है। शैक्षिक स्तर व्यापक रूप से भिन्न होते हैं, बिना किसी औपचारिक शिक्षा वाले से लेकर उच्च शिक्षित व्यक्तियों तक, जो शिक्षा तक पहुँच और महिलाओं के जीवन पर इसके प्रभाव में असमानताओं को दर्शाता है।

सामाजिक विशेषताएँ उन विविध सांस्कृतिक और सामुदायिक सेटिंग्स को रेखांकित करती हैं जहाँ से ये महिलाएँ आती हैं। कई पारंपरिक पारिवारिक संरचनाओं से संबंधित हैं, जहाँ भूमिकाएँ अक्सर लिंग द्वारा परिभाषित की जाती हैं। महिलाओं की एक महत्वपूर्ण संख्या गृहिणी है, जबकि अन्य कृषि, सेवा उद्योग और अनौपचारिक क्षेत्र की नौकरियों सहित विभिन्न व्यवसायों में लगी हुई हैं। परिवार और सामुदायिक नेटवर्क सहित सामाजिक सहायता प्रणालियाँ उनके दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जो उनके निर्णयों और अवसरों को प्रभावित करती हैं।

आर्थिक रूप से, नमूना महिलाएँ आय के स्तरों का एक स्पेक्ट्रम दिखाती हैं, जो समुदाय के भीतर सामाजिक–आर्थिक स्तरीकरण को दर्शाती हैं। इनमें से बहुत सी महिलाएँ कम आय वाले, अकुशल श्रम में लगी हुई हैं, जो अक्सर अस्थिर और कम वेतन वाला होता है। कुछ महिलाएँ, विशेष रूप स उच्च शिक्षा या विशेष कौशल वाली महिलाएँ, अधिक स्थिर और बेहतर वेतन वाली नौकरियों में कार्यरत हैं। आर्थिक स्वतंत्रता में काफी भिन्नता है, कई महिलाएँ वित्तीय सहायता के लिए परिवार के सदस्यों या जीवनसाथी पर निर्भर रहती हैं, जबकि अन्य ने उद्यमिता या रोजगार के जरिए आर्थिक आत्मनिर्भरता की अलग–अलग डिग्री हासिल की है। आर्थिक डेटा महिलाओं के बीच आर्थिक सशक्तीकरण हासिल करने में चुनौतियों और प्रगति को उजागर करता है।

आयु

तालिका 15–34 आयु समूहों में (1075) नमूना विवाहित महिलाओं का आयुवार वितरण देती है। लगभग 55.1 प्रतिशत महिलाएँ 25 और उससे अधिक आयु वर्ग से संबंधित हैं। केवल 11. 8 प्रतिशत महिलाएँ 20 वर्ष से कम आयु की हैं। 33.1 प्रतिशत महिलाएँ 20 वर्ष से कम आयु की हैं।

तालिका 4.1 नमूना महिलाओं का उम्र के अनुसार वितरण

उत्तरदाता की आयु	आवृत्ति	प्रतिशत
15.20	127	1 1ण8
21.24	356	33ण1

25.34	592	55ण1
कुल	1075	100

निवास स्थान

तालिका 4.1.2 नमूना महिलाओं के ग्रामीण शहरी वितरण को स्पष्ट करती है। यह दिखाया गया है कि कुल महिलाओं में से लगभग तीन चौथाई ग्रामीण क्षेत्र से संबंधित हैं और केवल 25.2 प्रतिशत शहरी क्षेत्र में हैं।

तालिका 4. 2 उत्तरदाता के निवास स्थान के अनुसार नमूना महिलाओं का वितरण

निवास की जगह	आवृत्ति	प्रतिशत
ग्रामीण	804	74ण8
शहरी	271	25ण2
कुल	1075	100

धर्म

तालिका 4.1.3 धार्मिक वितरण के बारे में विवरण देती है। 1075 महिलाओं में से आधे से ज्यादा हिंदू हैं (560)। ईसाइयों की हिस्सेदारी 36.7 प्रतिशत है और मुसलमानों की हिस्सेदारी सिर्फ 11.3 प्रतिशत है।

तालिका 4. 3 उत्तरदाताओं के धर्म के अनुसार नमूना महिलाओं का वितरण

धर्म	आवृत्ति	प्रतिशत
हिंदू	560	52ण1

ईसाई	394	36ण7
मुस्लिम	121	11ण3
कुल	1075	100

जाति

जातिवार वितरण में, दो–पांचवें से अधिक हिस्से पर अगड़ी जातियाँ हैं, जिनका योगदान 43. 7 प्रतिशत है। दूसरे स्थान पर अन्य पिछड़ी श्रेणी की महिलाएँ हैं, जिनका योगदान 28.4 प्रतिशत है। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजातियाँ 27.9 प्रतिशत के साथ हैं।

तालिका 4.4 जाति के अनुसार नमूना महिलाओं का वितरण

जाति	आवृत्ति	प्रतिशत
अन्य	470	43ण7
ओबीसी	305	28ण4
एससीध्एसटी	300	27ण9
कुल	1075	100

शिक्षा

तालिका 4.1.5 में शैक्षणिक योग्यता के आधार पर नमूने को वर्गीकृत किया गया है, लगभग 37.6 प्रतिशत महिलाओं के पास ैस्ब और उससे कम है। डिग्री और उससे ऊपर की शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाओं की संख्या लगभग 46.8 प्रतिशत है और 15.6 प्रतिशत ने प्लस टू स्तर की शिक्षा पूरी की है। यानी नमूना महिलाएँ उच्च शिक्षित हो सकती हैं।

तालिका 4. 5 शिक्षा के आधार पर नमूना महिलाओं का वितरण

शिक्षा	आवृत्ति	प्रतिशत

एसएसएलसी और उससे नीचे	404	37ण6
प्लस टू	168	15ण6
डिग्री और उससे ऊपर	503	46ण8
कुल	1075	100ण0

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ राज्य के बालोद जिले में महिला उत्थान कार्यक्रम का कार्यान्वयन क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में से एक में महिलाओं के उत्थान और सशक्तिकरण के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयास का प्रतिनिधित्व करता है। यह कार्यक्रम, कइ अन्य महिला–केंद्रित पहलों की तरह, महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, शिक्षा, स्वास्थ्य और राजनीतिक भागीदारी में सुधार पर ध्यान केंद्रित करके उनकी उन्नति में बाधा डालने वाले बहुआयामी मुद्दों को संबोधित करने का लक्ष्य रखता है। हालाँकि, बालोद जिले में व्यावहारिक कार्यान्वयन में कई तरह की चुनौतियाँ आई हैं, जिन्हें कार्यक्रम की सफलता सुनिश्चित करने के लिए सावधानीपूर्वक हल करने की आवश्यकता है। बालोद में प्राथमिक चुनौतियों में से एक गहरी जड़ें जमाए हुए सामाजिक–सांस्कृतिक मानदंड हैं जो लैंगिक असमानता को कायम रखते हैं। ये मानदंड अक्सर परिवार और समाज में महिलाओं की भूमिका तय करते हैं, जिससे उनकी शिक्षा और रोजगार के अवसर सीमित हो जाते हैं। प्रगतिशील नीतियों के बावजूद, सामाजिक परिवर्तन की धीमी गति एक बाधा बनी हुई है। महिलाओं को अक्सर सार्वजनिक जीवन में पूरी तरह से भाग लेने से रोका जाता है क्योंकि पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण उनकी भूमिकाओं को घरेलू स्थानों तक ही सीमित मानते हैं। इस समस्या से निपटने के लिए न केवल विधायी समर्थन की आवश्यकता है, बल्कि समुदायों को संवेदनशील बनाने और शिक्षा तथा जागरूकता अभियानों के माध्यम से दीर्घकालिक धारणाओं को बदलने के लिए निरंतर प्रयास भी करने होंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. खोबरागड़े, प्रीति और पाठक, हुलास और गौराहा, ए और चौधरी, वी. (2024)। छत्तीसगढ़ के बालोद जिले में स्व–सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण। 184–189.

2. अशरफ, गजाला (2020)। छत्तीसगढ़ में सरकारी नीतियों और योजनाओं के माध्यम से महिला सशक्तीकरण पर एक अध्ययन।

3. चंद्राकर, आकाश और पाठक, हुलास और घुरहा, अक (2021)। ममत्व योजना महिला स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) का व्यावसायिक प्रदर्शनरू छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले का एक केस स्टडी।

4. सिंह, शिवांगी (2018)। भारत में महिला सशक्तीकरण के मुद्दों और चुनौतियों पर एक अध्ययन।

5. पद्दर, अल्ताफ और माथवन, प्रो. (2022) भारत में महिला सशक्तीकरणरू समस्याएँ और चुनौतियाँ। 10.5281ध्मदवकव.7766803.

6. पाणिग्रही, देबाहुति (2019) ग्रामोण महिलाओं को सशक्त बनानारू स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से सतत विकास की समीक्षा, छत्तीसगढ़.

7. अहमद, सारा (2002) गैर सरकारी संगठनों में संगठनात्मक अभ्यास को बढ़ावा देनारू उत्थान का मामला. व्यवहार में विकास. 12. 298–311. 10.1080ध्0961450220149681.

8. मिश्रा, डॉ. मुकेश (2024) बिहार में महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए उठाए गए उपायों का अध्ययनरू अवसर और चुनौतियाँ. 10.13140ध्त्ळ.2.2.13857.83047.

9. पोखरेल, सरोज और खड़का, निरजन. (2024) ष्माइक्रोफाइनेंस के माध्यम से महिला सशक्तिकरण की खोजरू काठमांडू में महिलाओं की जीवन परिस्थितियों की जांचष्। 4. 1153–1161.

10. कपूर, राधिका. (2018). महिला सशक्तिकरण की चुनौतियाँ.

11. मुंधे, एकनाथ. (2021). भारत में महिला सशक्तिकरण के मुद्दों और चुनौतियों पर अध्ययन. 36. 41–46.

12. टेंभरे, मंजू. (2018). भारत में महिला सशक्तिकरण की चुनौतियाँ और संभावनाएँ.

13. गौतम, पी.एल., आधुनिक भारत (सामाजिक धार्मिक आन्दोलन), राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर 1998, पृ. 356 2

14. भारद्वाज, दिनेश चन्द्र, ऐतिहासिक निबन्ध (भारतीय पुनर्जारण और पाश्चात्य प्रभाव), लखनऊ, 1984, पृ. 223

15. विद्यालंकार, सत्यकेतु, भारतीय संस्कृति का विकास, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली, 1998, पृ. 509

16. शर्मा, सीताराम, उन्नीसवीं शती के भारतीय धार्मिक तथा सामाजिक जागरण, पृ. 189

17. शर्मा, कालूराम एवं व्यास, प्रकाश, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास, पृ. 244

18. शर्मा, कालूराम एवं व्यास, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास, पृ. 419

19. मुखर्जी, रवीन्द्र नाथ, भारतीय समाज व संस्कृति, पृ. 348

20. शर्मा, कालूराम एवं व्यास, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास, पृ. 420